वर्ष-2, अंक-8, नवम्बर,14-जनवरी, 2015

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सम्पादक

आग्नेय

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सदानीरा का ई-संस्करण **sadaneera.com** पर उपलब्ध.

एक वर्ष में चार बार प्रकाशित
यह अंक : **नवम्बर,14-जनवरी, 2015**
मूल्य- 100 रुपये, वार्षिक 400 रुपये
संस्थाओं के लिए : वार्षिक 500 रुपये
विदेश के लिए : मूल्य 10 डालर

वार्षिक शुल्क **सदानीरा** के नाम पर
भोपाल में देय चेक या डिमाण्ड ड्राफ्ट या
मनीऑर्डर या नेट बैंकिंग से भेजें.

Current A/c : Sadaneera-118411023949
IFSC : BKDN0811184

अंक रजिस्टर्ड डाक से.

सम्पादकीय सम्पर्क :

बी-207, चिनार वुडलैण्ड,
कोलार रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.)
फ़ोन : 0755-2424126,
मो.- 093031-39295, 094244-10139
ई-मेल- **agneya@hotmail.com**

प्रकाशक :

महेन्द्र गगन
25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फ़ोन- 0755-2555789
मो.- 094250-11789
ई-मेल- **pahalepahal@gmail.com**

अनुक्रम

सम्पादक की ओर से 05

वीस्वावा शिम्बोर्स्का का गद्य

अनुवाद : **गीत चतुर्वेदी** 09

कविताएँ

सत्यपाल सहगल 25

अतुलवीर अरोड़ा 33

प्रमोद कौंसवाल 45

एकाग्र

उदयन वाजपेयी का रचना संसार

कविताएँ 73

डायरी 81

अनुवाद 93

यात्रा वृत्तान्त 120

साक्षात्कार 133

बाँग्ला कविता

नवनीता देवसेन/ अनुवाद **: उत्पल बैनर्जी** 159

राजस्थानी कविता

साँवर दईया/ अनुवाद **: जेठमल मारू** 171

नोटबुक

प्रिंट मरीचिका/ **सत्यपाल सहगल** 174

ग्रीक कविता

जॉर्ज सेफेरिस : राजनीति की गरिमा के बीच कविता की साफगोई/ अनुवाद **: विपिन चौधरी** 180

दो कवि

गणेश गनी 192

संजीव कुमार श्रीवास्तव 208

कवि की चिट्ठी

गणेश गनी 221

अवदान 226

सदानीरा : यहाँ से लें 228

कवि कीड़ा नहीं है!

कौन कवि है
ताद्यूश रोज़ेविच

कवि वह है जो कविताएँ लिखता है
और वह, वह है जो कविताएँ नहीं लिखता है
कवि वह है जो जंजीरों को फेंक देता है
और वह, वह है जो जंजीरों से अपने को बाँध लेता है
कवि वह है जो विश्वास करता है
और वह, वह है जो अपने को विश्वास पर टिका नहीं पाता है
कवि वह है जो झूठ बोलता है
और वह, वह है जो जिससे झूठ बोला जाता है
कवि वह है जो गिरने के लिए झुकता है
और वह, वह है जो स्वयं को ऊपर उठाता है
कवि वह है जो जाने की कोशिश करता है
और वह, वह है जो जा नहीं सकता है

क्या बिना यश, कीर्ति, सम्मान और कुर्सी के लेखन सम्भव नहीं है? क्या साहित्य का संसार उतना ही धूमिल, कलंकित, कपटपूर्ण और ईर्ष्याप्रेरित नहीं है जितना राजनीति का संसार? एक रचनाकार के रूप में अपनी चदरिया को जतन से ओढ़ने का सामर्थ्य क्या हमारे पास बचा है? साहित्य के संसार में जो जितना मेधावी, प्रबुद्ध, तेजस्वी और जीनियस है, उतना ही अपने जीवन में घटिया, छोटा और टुच्चा है। आज का लेखक जिस तत्परता, तेजी और फुर्ती से अपने लिए सुख और सुविधा के साधन बटोर लेना चाहता है, उतनी सक्रियता से वह अन्याय, उत्पीड़न और अनाचार के विरुद्ध खड़ा नहीं होता। प्रतिरोध और प्रतिपक्ष की संस्कृति से उसका कोई लेना-देना नहीं हैं। यहाँ तक कि नरसंहारों के खिलाफ भी उसके ओंठ खुलते दिखाई नहीं देते हैं। एक कवि की ज़िन्दगी और उसके लेखन के बीच इतना झूठ, फ़रेब, लालच और विश्वासघात का मलबा और कचरा इकट्ठा हो गया है कि सब कुछ उसमें ही ढँक और लुप्त हो गया है। सम्भवतः काफ़्का ने अपनी 'कायाकल्प' कहानी में जिस कीड़े को नायक बनाया है, आज का कवि उस कीड़े का जायज उत्तराधिकारी है।

साहित्य के ओलम्पिक की प्रतिस्पर्धाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय आना ज़रूरी नहीं है। इस खेल के अजीब कायदे-कानून हैं। इसमें गचट्टी, चुके, छूटे हुए और तलछट बने लोगों की गरदनों में स्वर्णपदक लटक सकते हैं। ये वे लोग हैं जिनकी ज़िन्दगी ही उनके लिखे हुए को झुठला रही है। ये वे लोग हैं जो यह महसूस करने से कन्नी काटते हैं कि उन्होंने समाज को जो कुछ दिया है उससे अधिक वसूल कर रहे हैं। किसी भी सामाजिक हस्तक्षेप की निरन्तरता को बनाये रखने के लिए कुछ नहीं कर रहे है, कुछ नहीं दे रहे हैं। सिर्फ़ लिए जा रहे हैं। भरपेट खाने पर डकार रहे हैं। हमारा हिन्दी साहित्य उन रचनाकारों की जाग़ीर बनता जा रहा है जो या तो पत्रिकाओं के सम्पादक हैं या विवादास्पद संस्कृतिकर्मी हैं या जिनके पास विचारधाराओं की कामधेनु को दुहने का अवसर प्राप्त है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो साहित्य के लोकतंत्र और उसकी स्वायत्तता के लिए दिन-रात एक किए हुए हैं। इनमें से कुछ उस टिटहरी की तरह उल्टे लटके हुए हैं जिन्हें यह भ्रम हो जाता है कि आसमान गिरनेवाला है और उनको ही उसे उल्टे होकर रोकना है। जो बाहर से जितने झकाझक सफेद हैं अन्दर से वे उतने ही अमावस हैं। निर्भीक को बोलने से वे रोक सकते हैं। शत्रुओं को अपने भवनों में घुसने नहीं देते। वे बौने को महाबली और शिखण्डी को अर्जुन बनाकर सभाओं में प्रस्तुत कर सकते हैं।

एक बार फिर काफ़्का की एक कहानी का सहारा लिया जाए तो यह कहा जा सकता है कि आज का कवि न तो बिल्ली है और न मेमना। लेकिन वह इससे सन्तुष्ट नहीं है, वह कुत्ता भी होना चाहता है। वह अपनी चमड़ी से दुखी है और